सीख और संवेदना की पाठशाला: सडाको और कागज़ के पक्षी

फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखक: अरविन्द कुमार सिंह, प्राथमिक विद्यालय सहायक अध्यापक, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

हाल ही में कक्षा 4 के विद्यार्थियों ने अपनी पाठ्यपुस्तक फुलवारी में कवयित्री **महादेवी वर्मा** जी द्वारा रचित कविता **"कहाँ रहेगी चिड़िया"** पढ़ी। इस कविता में आंधी से चिड़िया का घोंसला टूट जाता है और वह दुःख से कराह उठती है। छोटे बच्चों के लिए दुःख और पीड़ा समझना एक अत्यंत संवेदनशील अनुभव होता है। इसी संदर्भ में विद्यार्थियों को **एलेनोर कोएर** द्वारा लिखित पुस्तक **"सडाको और कागज़ के पक्षी"** के बारे में बताया गया। यह पुस्तक न केवल एक मार्मिक कहानी सुनाती है, बल्कि बच्चों के मन में शांति, संवेदना और रचनात्मकता के बीज भी बोती है।

सडाको और कागज़ के पक्षी शब्द, संवेदना और कल्पना की दुनिया बदलने की ताक़त का ज्वलंत उदाहरण है।

सडाको और कागज़ के पक्षी

हिरोशिमा की रहने वाली 11 वर्ष की नन्ही बच्ची **सडाको** द्वितीय विश्व युद्ध में गिरे परमाणु बम के दुष्परिणामों का शिकार बनी। वह ब्लड कैंसर से जूझते हुए अस्पताल में भर्ती रही। उसकी मित्र चुजुको ने उसे विश्वास दिलाया कि यदि वह एक हज़ार कागज़ की चिड़ियाँ बनाएगी, तो उसकी बीमारी ठीक हो जाएगी। सडाको ने हर चिड़िया के साथ जीवन और शांति की प्रार्थना की। लेकिन वह हज़ार चिड़ियाँ पूरी नहीं कर सकी और दुनिया से विदा हो गई। उसकी अधूरी इच्छा उसके मित्रों ने पूरी की और सडाको शांति का प्रतीक बन गई।

प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, जनपद बुलंदशहर के छात्र उड़ान नामक दीवार पत्रिका बनाते हैं। इस बार की दीवार पत्रिका को **"सडाको और कागज़ के पक्षी"** विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। इसके अंतर्गत बच्चों द्वारा की गई गतिविधियाँ इस प्रकार हैं—

बच्चों की रचनात्मक प्रतिक्रिया

दीवार पत्रिका के लिए बच्चों ने सडाको, केनजी और लेखक को पत्र लिखे। कक्षा 4 की छात्रा कशिश ने सडाको की तरफ से एक पत्र बच्चों को भी लिखा। कुछ बच्चों ने अपनी बीमारी और अस्पताल जाने के अनुभव भी साझा किए। पत्रिका के किनारों पर रंग-बिरंगे पक्षी बनाए गए, जिससे पत्रिका जीवंत और प्रेरणादायक बन गई।

बच्चों के पत्रों से अंश

कक्षा 4 की छात्रा कशिश ने सडाको की ओर से बच्चों को पत्र लिखा:

"प्यारे दोस्तों, 6 अगस्त 1945 को हमारे शहर हिरोशिमा में 'लिटिल बॉय' नाम का परमाणु बम गिरा था। उससे लाखों जानें चली गईं। पर अब मुझे लगता है कि 2025 में ऐसा नहीं होगा। अब विश्व में कहीं भी युद्ध नहीं होगा और देशों में शांति होगी। कहीं भी परमाणु बम नहीं गिरेगा और हरियाली ही हरियाली होगी।"

छात्रा नैना ने सडाको के नाम पत्र लिखा:

"अगर तुम ठीक होना चाहती हो तो हरी सब्ज़ियाँ खाओ, उनसे तुम जल्दी ठीक हो जाओगी। मुझे भी एक बार बुखार हो गया था, मैंने हरी सब्ज़ियाँ खाईं और मैं जल्दी ठीक हो गई। हम भी तुम्हें ठीक करने के लिए बहुत सारी चिड़िया बना रहे हैं।"

छात्र देवराज ने केनजी को पत्र लिखा:

"हमें दुख है कि तुम्हें ब्लड कैंसर है। हमने तुम्हें और सडाको को बचाने के लिए बहुत सी चिड़िया बनाई हैं। जल्दी ही तुम्हें भेज देंगे।"

छात्रा मानवी ने लेखक को पत्र लिखा:

"जब मैंने 'सडाको और कागज़ के पक्षी' की कहानी पढ़ी, तो मेरा मन बहुत दुखी हो गया। मैं चाहती थी कि सडाको ठीक हो जाए। हमने उसके लिए बहुत सारे पक्षी भी बनाए थे। अगर वह एक अस्पताल में ठीक नहीं हो रही थी, तो काश वह किसी और अस्पताल चली जाती।"

इन पत्रों के माध्यम से हम देख पा रहे हैं कि बच्चे कहानी सुनने के दौरान सडाको से पूरी तरह जुड़ गए हैं। वे युद्ध के भयंकर परिणामों को समझने लगे हैं और उनके पत्रों ने इस पत्रिका को जीवंत बना दिया है।

कला और शिल्प का अनुभव

कहानी के दौरान अस्पताल में सडाको की मित्र चुजुको ने उसे 1000 पक्षी बनाने पर स्वस्थ होने का विश्वास दिलाया। तब मैंने बच्चों से प्रस्ताव रखा कि क्या हम भी सडाको को ठीक होने के लिए कुछ पक्षी बनाकर भेज सकते हैं? बच्चों ने तुरंत सहमति दी। उन्होंने छोटे-बड़े रंगीन कागज़ों को मोड़कर बहुत सुंदर कागज़ के पक्षी बनाए। कुछ ही दिनों में उन्होंने 261 पक्षी बना दिए।

इस गतिविधि से बच्चे न केवल लेखन में, बल्कि चित्रकला और सजावट की गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भागीदार बने। इन अनुभवों ने उनकी रचनात्मकता को नई दिशा दी और साथ ही सामूहिक कार्य करने की आदत, धैर्य तथा बारीकियों पर ध्यान देने का गुण विकसित किया।

इतना ही नहीं, बच्चों ने कागज़ से टोपी (cap) और पवनचक्की (windmill) बनाना भी सीखा, जिसने इस गतिविधि को और अधिक रोचक व आनंदपूर्ण बना दिया।

कागज़ के पक्षियों पर बच्चों के संदेश

कहानी पढ़ते-पढ़ते ही बच्चों ने रंग-बिरंगे कागज़ के पक्षी बनाना शुरू कर दिए। कहानी पूरी होने से पहले ही उन्होंने बहुत सारे पक्षी बना लिए थे। इन पक्षियों पर बच्चों ने अपने संदेश भी लिखे। उनके शब्दों में संवेदना, आशा और प्रार्थना झलक रही थी। बाद में उन्होंने सारे पक्षी कक्षा में टांग दिए।

विभिन्न कौशलों पर कार्य

"सडाको और कागज़ के पक्षी" प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायक सिद्ध हुई। इस पुस्तक ने बच्चों के समग्र विकास में योगदान दिया।

- **भाषा कौशल** के विकास में यह पुस्तक सहायक बनी। बच्चों ने पढ़ने, लिखने और अपनी बात को अभिव्यक्त करने का अभ्यास किया। पत्र लेखन से उनकी लेखन क्षमता और अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि हुई। बच्चों ने अपनी बीमारी और अस्पताल जाने के अनुभवों को भी लेख और संस्मरण के रूप में साझा किया, जिससे उनका आत्मविश्वास और आत्म-अभिव्यक्ति कौशल मजबूत हुआ।

- **कला कौशल** में बच्चों ने चित्रकारी, ओरिगामी और सजावट की गतिविधियों के माध्यम से रचनात्मकता का अनुभव किया। कागज़ की चिड़ियाँ, टोपी और पवनचक्की बनाना उनके लिए सीखने का आनंददायक अवसर रहा।

- इस कहानी से बच्चों के **सामाजिक कौशल** का भी विकास हुआ। बच्चों ने सडाको और उसके संघर्ष को समझकर करुणा, सहयोग और संवेदनशीलता जैसे मानवीय मूल्यों को आत्मसात किया। उन्होंने शांति और मानवता के महत्व को गहराई से महसूस किया।
  https://youtu.be/d99wVedJNyU?si=hIoze-khBgcxavkj

- इस कहानी से बच्चों के **भावनात्मक कौशल** का भी विकास हुआ। बच्चों ने युद्ध और शांति पर विचार किया, परमाणु बम की त्रासदी को समझा और यह महसूस किया कि युद्ध केवल विनाश लाता है और सडाको के लिए भावनात्मक सन्देश भी लिखे।

निष्कर्ष

“सडाको और कागज़ के पक्षी” केवल एक कहानी नहीं, बल्कि **शांति और मानवता का जीवंत संदेशवाहक** है। इसने बच्चों के मन में करुणा, सहयोग और भाईचारे के बीज बो दिए। हमारे विद्यालय के बच्चों ने इसे पढ़कर न केवल कहानी समझी, बल्कि उसे जीने का प्रयास किया। उन्होंने रंग-बिरंगी चिड़ियाँ बनाईं, पत्र लिखे, संस्मरण तैयार किए और अपनी कक्षा को सजाया। इन गतिविधियों में उनकी रचनात्मकता, संवेदनशीलता और सामूहिकता साफ झलकती है।

यह किताब सचमुच सीख औरसंवेदना की पाठशाला है — जहाँ बच्चे केवल अक्षरों को पढ़ना नहीं सीखते, बल्कि जीवन के गहरे मूल्यों को आत्मसात करते हैं। मुझे इस पुस्तक को पढ़ाने के दौरान कई सारी कागज की चीजें बनाना सीखने के अवसर प्राप्त हुए। शिक्षक के रूप में यह पुस्तक बच्चों के साथ साझा करना मेरे लिए बहुत ही प्रेरणादायक और सीख परक अनुभव रहा। सीखने सिखाने की यात्रा में पुस्तकें हमेशा उपयोगी साबित होती हैं।

लेखक परिचय:

अरविन्द कुमार सिंह के प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी जनपद बुलंदशहर उत्तर प्रदेश में पिछले 9 वर्षों से सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत है। अरविन्द कुमार सिंह LLF के नौ माह कोर्स के पूर्व प्रतिभागी भी है। इसके साथ ही उनके विद्यालय के छात्र-छात्राएं पिछले 3 वर्षों से उड़ान नाम की दीवार पत्रिका बना रहे हैं साथ ही छात्र-छात्राओं के लिए कविता, कहानी, चित्र और लेख बाल विज्ञान पत्रिका चकमक में लगातार प्रकाशित होते रहते हैं। इनके विद्यालय के छात्रों द्वारा बनाया गया टाइमलाइन कैलेंडर को SCERT राजस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हवा महल पत्रिका में चुका है। इनके कक्षा अनुभव लगातार विभिन्न पत्रिका एवं वेबपोर्टल पर प्रकाशित होते रहते है।

दिवार पत्रिका का लिंक